भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 970

28 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

वैश्विक स्तर पर योग एवं पारंपरिक चिकित्सा में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका

970. श्री प्रदीप कुमार वर्माः

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि योग और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के वैश्विक संवर्धन और स्वीकार्यता में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है;

(ख) यदि हां, तो विगत पांच वर्षों के दौरान योग और अन्य आयुष पद्धतियों के अंतर्राष्ट्रीय संवर्धन और प्रचार-प्रसार हेतु उठाए गए प्रमुख कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने आयुष-आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने हेतु विशेष पहलें की हैं;

(घ) क्या इन पहलों के परिणामस्वरूप आयुष क्षेत्र में रोजगार और उद्यमिता के अवसरों में वृद्धि हुई है; और

(ड) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ख): योग की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता, जिसमें वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपने सदस्य देशों के सहयोग से दिनांक 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आईडीवाई) के रूप में अंगीकार करना और प्रत्येक वर्ष विश्व भर में इसका आयोजन करना शामिल है। आयुष मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों, क्षमता निर्माण कार्यक्रमों, शैक्षणिक सहयोग, अनुसंधान पहलों और विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ सहयोग के माध्यम से योग को बढ़ावा दे रहा है, जिससे इसकी वैश्विक पहुँच और स्वीकार्यता बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुष मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई 'योग प्रशिक्षण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की तकनीकी रिपोर्ट', योग प्रशिक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक स्थापित करती है, जिससे स्वास्थ्य सेवा में योग की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और वैश्विक एकीकरण को बढ़ावा मिलता है।

वर्ष 2025 में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) और मंगोलियाई योग महासंघ (एमवाईएफ) के मध्य हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओयू) योग के क्षेत्र में अकादमिक सहयोग की स्थापना की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। वर्ष 2026 में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) और एसोसिएशन रीयूनियन डेस रिलेशंस एट क्रिएशन्स कल्चरल्स (एआरआरसीसी) के मध्य हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन का उद्देश्य योग के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना और आगे बढ़ाना है।

आयुष मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी सहित आयुष के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने हेतु केंद्रीय क्षेत्र की योजना कार्यान्वित की जा रही है। इस योजना के तहत मंत्रालय भारतीय आयुष दवा निर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा पद्धतियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है; हितधारकों के बीच बातचीत को बढ़ावा देता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष के बाजार के विकास को बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना और प्रशिक्षण कार्यशाला/संगोष्ठी आयोजित करने के माध्यम से शिक्षा और अनुसंधान का संवर्धन करना है तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देता है।

आयुष मंत्रालय ने योग और अन्य आयुष पद्धतियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार हेतु 27 अंतर-देशीय समझौता ज्ञापनों, 16 आयुष पीठ समझौता ज्ञापनों और 57 अंतर-सांस्थानिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं। आयुष पाठ्यक्रमों के लिए, मंत्रालय प्रतिवर्ष विदेशी नागरिकों को भारत के प्रतिष्ठित संस्थानों में 104 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता है।

(ग) से (ङ): आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा आयुष-आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए की गई पहलों का विवरण, साथ ही अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाने, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने, कौशल विकास करने और पेशेवर अभ्यास, अनुसंधान एवं कल्याण सेवाओं के लिए अवसर बढ़ाने के माध्यम से आयुष पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने के परिणाम, **संलग्नक** में दिए गए हैं।

*****

संलग्नक

क्र.सं.	अनुसंधान परिषद्/राष्ट्रीय संस्थान	पहलों/परिणाम का विवरण
1.	राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान	राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान निम्नलिखित शीर्षक (चालू परियोजना) के अंतर्गत राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर), कोलकाता, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर और कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) अस्पताल, रांची के सहयोग से निम्नलिखित परियोजना का संचालन कर रहा है: i. हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा पर पोडोफाइलम पेल्टटम मदर टिंचर और इसके तनुकरण के आणविक तंत्र का अध्ययन: एक इन विवो अध्ययन" (एनआईपीईआर, कोलकाता के साथ) ii. निमोनिया और दीर्घकालिक प्रदाह में होम्योपैथी दवाओं के बहु-घटक उपचार के आधारभूत तंत्र को जानने के दृष्टिकोण। (आईआईटी, खड़गपुर) iii. पीरियोडोंटाइटिस रोगियों में गैर-सर्जिकल पीरियोडोंटल चिकित्सा के पूरक के रूप में कुल एंटीऑक्सीडेंट क्षमता पर हाइपरिकम परफोरेटम मदर टिंचर (क्यू) का प्रभाव: एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण। (ईएसआईसी अस्पताल, रांची)। एनआईएच, सीएमई योजना और अन्य प्रशिक्षण एवं संकाय विकास कार्यक्रमों के माध्यम से आयुष-आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को भी बढ़ावा देता है।
2.	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच)	एनईआईएएच, शिलांग द्वारा वर्तमान में दो नैदानिक अनुसंधान किए जा रहे हैं। i. आयुर्स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत आयुर्वेद अनुसंधान: मेघालय के पूर्वी खासी हिल जिले के मावपत और माइलियम ब्लॉक में आदिवासी महिलाओं (18 से 45 वर्ष की आयु) में आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया (आईडीए) के लिए आयुर्वेदीय उपचारों को बढ़ावा देना" शीर्षक से आयुर्वेद अनुसंधान। ii. वृद्ध वयस्कों में एनीमिया के उपचार में पुनर्नवदी मंडुरा की प्रभावशीलता पर अनुसंधान परियोजना: टीम स्मार्ट 3.0 कार्यक्रम के तहत एक सामुदायिक-आधारित अध्ययन।

3.	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (सीसीआरवाईएन)	**पहल-** सीसीआरवाईएन ने अनुसंधान परियोजनाओं, सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रमों, अनुसंधान पद्धति कार्यशालाओं, संकाय विकास कार्यक्रमों और अनुसंधानकर्ताओं, योग पेशेवरों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए क्षमता-निर्माण पहलें शुरू की हैं। **परिणाम-** इन पहलों के माध्यम से प्रशिक्षित योग पेशेवरों, अनुसंधान कर्मियों, चिकित्सकों, प्रशिक्षकों और कल्याण चिकित्सकों की संख्या बढ़ाकर रोजगार और उद्यमिता के अवसर बढ़ाए हैं। साथ ही, योग और प्राकृतिक चिकित्सा कल्याण केंद्रों, प्रशिक्षण संस्थानों और समुदाय-आधारित स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियों के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा मिला है।
4.	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए)	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर ने आयुष-आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों की शुरुआत की है। i. यह संस्थान निर्धारित शैक्षणिक और नियामक प्रावधानों के अनुसार स्नातकोत्तर (एमडी) और डॉक्टरेट (पीएचडी) कार्यक्रम संचालित करता है। साक्ष्य-आधारित आयुर्वेद अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न शैक्षणिक विभाग अनुसंधान परियोजनाएँ, नैदानिक अध्ययन और बहु-विषयक सहयोगात्मक अनुसंधान करते हैं। ii. यह संस्थान अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करने के लिए नियमित रूप से आयुष मंत्रालय के मार्गदर्शन में सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रमों का आयोजन करता है, साथ ही अनुसंधान पद्धति, वैज्ञानिक लेखन, जैव सांख्यिकी और आयुर्वेद के उभरते क्षेत्रों पर कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है। iii. इसके अतिरिक्त, संस्थान **स्वयं** पोर्टल के माध्यम से डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देता है। संकाय सदस्यों और अनुसंधानकर्ता छात्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक, अनुसंधान और क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन पहलों ने आयुर्वेद शिक्षा, साक्ष्य-आधारित अनुसंधान और संस्थागत क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है
5.	राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान	**पहलें-** राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) ने एक समर्पित अनुसंधान विभाग और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) -पंजीकृत

	(एनआईएन)	संस्थागत नैतिकता समिति (आईईसी) की स्थापना करने के माध्यम से अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को सुदृढ़ किया है। इस संस्थान ने संकाय विकास कार्यक्रम, अनुसंधान पद्धति कार्यशालाएँ, अच्छा नैदानिक अभ्यास (जीसीपी) प्रशिक्षण, वैज्ञानिक लेखन कार्यशालाएँ, सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम और संकाय, अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों के बीच अनुसंधान दक्षताओं को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया है। इसने योग और प्राकृतिक चिकित्सा में नैदानिक अनुसंधान, अवलोकन संबंधी अध्ययन, व्यवस्थित समीक्षा, समुदाय-आधारित और सहयोगात्मक अनुसंधान को बढ़ावा दिया है, क्लिनिकल ट्रायल्स रजिस्ट्री-इंडिया (सीटीआरआई) में नैदानिक अध्ययनों के पंजीकरण को प्रोत्साहित किया है, सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं में अनुसंधान परिणामों के प्रकाशन की सुविधा प्रदान की है, अनुसंधान शासन और प्रकाशन नैतिकता के लिए मानक संचालन प्रक्रियाएँ (एसओपी) विकसित की हैं, और प्रयोगशाला विकास, डिजिटल अनुसंधान संसाधनों और जाँचकर्ताओं के लिए सांख्यिकीय समर्थन के माध्यम से अनुसंधान अवसंरचना को सुदृढ़ किया है। **परिणाम-** राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) ने विशेष शैक्षणिक और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से आयुष क्षेत्र में रोजगार क्षमता और उद्यमिता को बढ़ाने में योगदान दिया है। अनुसंधान पद्धति में फैलोशिप कार्यक्रम ने अनुसंधान डिजाइन, बायोस्टैटिस्टिक्स, वैज्ञानिक लेखन, नैतिकता और साक्ष्य पीढ़ी में दक्षताओं को मजबूत किया है, जो प्रतिभागियों को अनुसंधान, शिक्षाविदों और डॉक्टरेट अध्ययन में करियर के लिए तैयार करता है। चिकित्सक सहायक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (टीएटीसी) ने प्राकृतिक चिकित्सा अस्पतालों, कल्याण केंद्रों, योग संस्थानों और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में रोजगार के लिए चिकित्सा सहायकों का एक कुशल कार्यबल विकसित किया है। इसके अलावा, ओजोन चिकित्सा में सर्टिफिकेट कार्यक्रम, एक्यूपंक्चर में फैलोशिप कार्यक्रम और जीवनशैली चिकित्सा में फैलोशिप कार्यक्रम ने स्वास्थ्य पेशेवरों को विशेष नैदानिक कौशल से समृद्ध किया है, जिससे वे अपने अभ्यास के दायरे का विस्तार कर सकते हैं, स्वतंत्र क्लीनिक और कल्याण सेवाएँ स्थापित कर सकते हैं, और अस्पतालों, कल्याण केंद्रों और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था में रोजगार के अवसरों में सुधार कर सकते हैं। इन पहलों ने आयुष क्षेत्र में उद्यमिता और साक्ष्य-आधारित अभ्यास को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता को मजबूत किया है।
6.	राष्ट्रीय होम्योपैथी	**पहलें-** राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) ने अन्य बातों के साथ-साथ

	आयोग	होम्योपैथी शिक्षा, अनुसंधान अभिविन्यास और क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करने के लिए कई पहलें की हैं, जो इस प्रकार हैं: i. अधिसूचित विनियमों के माध्यम से बीएचएमएस और एमडी (होम्योपैथी) कार्यक्रमों के लिए योग्यता-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन। ii. आयोग ने दिनांक 7.12.2022 को होम्योपैथी स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम बीएचएमएस विनियमन को अधिसूचित किया है, जिसमें युवा अनुसंधानकर्ताओं को बढ़ावा देने के लिए स्नातक स्तर पर अनुसंधान पद्धति विषय पर शिक्षा आरंभ की गई है। iii. आयोग ने होम्योपैथी में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 1 दिसंबर 2023 को राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (होम्योपैथी में चिकित्सा अनुसंधान) विनियम 2023 को अधिसूचित किया है। iv. राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग ने पूरे भारत में होम्योपैथी पर अनुसंधान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए होम्योपैथी शिक्षा बोर्ड के तहत होम्योपैथी अनुसंधान विनियमन समिति का गठन किया है। v. होम्योपैथी महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग के लिए, होम्योपैथी में आधुनिक उन्नति, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के पूरक के लिए कार्यप्रणाली (स्मार्ट-नॉम) को विनियमन में शामिल किया गया है। vi. आयोग ने केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् के वैज्ञानिकों के सहयोग से स्नातकोत्तर छात्रों और शिक्षकों के लिए अनुसंधान पद्धति प्रशिक्षण आयोजित किया है। vii. छात्रों और संकाय के बीच अनुसंधान अभिविन्यास को सुदृढ़ करने के लिए केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएच) और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग। viii. होम्योपैथी शिक्षा में शासन, पारदर्शिता और गुणवत्ता में सुधार के लिए आयुष शिक्षा पोर्टल और अन्य शैक्षणिक प्लेटफार्मों सहित डिजिटल पहल शुरू की गई है। **परिणाम-**राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग द्वारा की गई पहलों के परिणामस्वरूप रोजगार में वृद्धि हुई। होम्योपैथी पाठ्यक्रमों के लिए योग्यता-आधारित पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन ने शिक्षा मानक विकसित करने के लिए अधिक शिक्षण संकायों की आवश्यकता उत्पन्न की है। इस संबंध में 100 बिस्तरों वाले होम्योपैथी चिकित्सा महाविद्यालय में 12 पूर्णकालिक शिक्षकों की

		वृद्धि हुई है (न्यूनतम आवश्यक मानकों वर्ष 2024 के नए विनियमन के अनुसार 40 पूर्णकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है, जबकि पिछली आवश्यकता 28 शिक्षकों की थी)। आयोग ने दिनांक 7.12.2022 को होम्योपैथी स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम बीएचएमएस विनियमन को अधिसूचित किया है, जिसमें सांख्यिकीय सहायक की आवश्यकता के साथ सामुदायिक चिकित्सा विभाग में स्नातक स्तर पर अनुसंधान पद्धति विषय प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (होम्योपैथी स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम - होम्योपैथी में चिकित्सा में चिकित्सक) विनियम, 2024 में अनुसंधान पद्धति और बायोस्टैटिस्टिक्स की शुरूआत एक एसोसिएट प्रोफेसर/प्रोफेसर - अनुसंधान पद्धति और बायोस्टैटिस्टिक्स का पद सृजित हुआ है। एनसीएच न्यूनतम आवश्यक मानक (एमईएस) विनियम, वर्ष 2024 में प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय के लिए एक पुरुष और एक महिला योग प्रशिक्षक की शुरुआत की गई है। फार्माकोलॉजी और मनोविज्ञान विषयों के लिए अतिरिक्त शिक्षण कर्मचारियों ने भी रोजगार के अवसर में वृद्धि की है। आयुष शिक्षा पोर्टल और अनुसंधान से संबंधित अन्य शैक्षणिक प्लेटफार्मों सहित डिजिटल पहलों ने आईटी पेशेवरों के रोजगार के अवसर को बढ़ाया है।
7.	केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएएस)	आयुर्वेद के वैज्ञानिक साक्ष्य आधार को सुदृढ़ करने और पारंपरिक ज्ञान को समकालीन विज्ञान के साथ एकीकृत करने के उद्देश्य से आयुष आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई पहल की हैं। आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन, केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएएस) देश भर में अपने 30 संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से अनुसंधान करता है। परिषद् साहित्यिक, मौलिक, दवा मानकीकरण, फार्मास्युटिकल, फार्माकोलॉजिकल, माइक्रोबायोलॉजी और जैव प्रौद्योगिकी, औषधीय पौधे, नैदानिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान को शामिल करते हुए बहु-विषयक अनुसंधान करती है। यह पारंपरिक आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन को भी मान्य करता है, नए साक्ष्य-आधारित उपचार विकसित करता है, दवाओं को मानकीकृत करता है, और व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुप्रयोगों के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है। अनुसंधान गतिविधियों को प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स सहित उन्नत तकनीकों को अपनाने के माध्यम से सहयोग किया जाता है। परिषद् अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, इंटर्नशिप, फैलोशिप और विभिन्न अनुसंधान संवर्धन योजनाएँ जैसे स्पार्क, एजीएनआई, प्रयत्ना और पोस्ट-डॉक्टरल फैलोशिप आयोजित

		करती है। इसके अतिरिक्त, सीसीआरएएस आयुर्वेद में अनुसंधान, ज्ञान प्रसार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकें, ई-पुस्तकें, डिजीटल संसाधन और अन्य शैक्षिक सामग्री प्रकाशित करता है।
8.	पीसीआईएम एंड एच	पीसीआईएम एंड एच, आयुष मंत्रालय की ओर से, समय-समय पर राज्य औषधि नियामकों/प्रवर्तन प्राधिकरणों, आयुष-मान्यता प्राप्त राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं और एएसयू एंड एच दवाओं से सम्बद्ध गुणवत्ता नियंत्रण/तकनीकी कर्मियों आदि के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।
9.	आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए)	**पहल-** आयुर्वेद में शिक्षण और अनुसंधान संस्थान आयुर्वेद संबंधी अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल है क्योंकि प्रत्येक वर्ष 90 एमडी विद्वान और 33 पीएचडी अनुसंधान किए जाते हैं, जिसके बाद संदर्भित पत्रिकाओं में प्रकाशन होते हैं। इनके अतिरिक्त, संस्थान में आईएमआर और ईएमआर परियोजनाएँ भी संचालित की जाती हैं। **परिणाम-** संस्थान के विद्वान शिक्षाविद् अनुसंधान और उद्यमिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में काफी अच्छा कर रहे हैं।